दैनिक भास्कर
रविवार, 15 अगस्त 2021 नोएडा

जश्न-ए-आजादी : तिरंगे की ऊंची उड़ान

गीतांजलि सक्सेना

देश का 75वां आजादी-ए-जश्न' उमंग और जोश से भरा हुआ है। यह दिन देश के सभी खिलाड़ियों के नाम समर्पित है। उनके बुलंद हौसले और जीत हासिल करने के उस जज्बे को सलाम। उन्हें आभार व्यक्त करने का खास दिन है, जिन्होंने पुनः विदेशी जमीन पर खेलों के खाते में सफलताएं दर्ज कराकर देश को गौरवान्वित महसूस कराया है। यह साल देश का स्वतंत्रता दिवस को ओलंपिक विजय उत्सव रूप में मनाया जाना वास्तव में देश के नागरिकों के लिए बेहद गर्व की बात है, क्यों ना हो ... इन खिलाड़ियों ने देश के इतिहास में नये पन्ने दर्ज किए हैं ...ऐसा नहीं है कि देश ने खेल के मैदानों में पहले जीत हासिल न की हो और मैडलों पर राज नहीं किया है। दरअसल महत्वपूर्ण यह है कि इन कठिन परिस्थितियों में जो विजय हासिल की है, वाकई आज मिसाल बनकर देश के हर नागरिक के लिए प्रेरणा की मशाल जला कर दिशा की ओर संदेश दिया कि हर हिन्दुस्तानी में कठिन परिश्रम के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की अपार क्षमता है। देश प्रतिभाओं से भरा हुआ है। बस जरूरत है उनके हुनर को समझने एवं तराशने और सही समय पर उचित प्लेटफॉर्म प्रदान करने की। सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश ने हर क्षेत्र के मैदान में उनके महत्वपूर्ण योगदान की छाप दर्ज है। भारत के गौरवशाली इतिहास में स्वतंत्रता के लिए सेनानियों के बलिदान को सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ है ... जिनके बलिदान के बलबूते मिली स्वतंत्रता का जश्न मनाने वाले दिन 15 अगस्त पर सेनानियों की याद में उन्हें नमन करने और उनके सम्मान में ध्वजारोहण की परम्परा गर्व के उन ऐतिहासिक क्षणों व यादों को दर्शाता है...जिन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया है। देश की संस्कृति के अद्वितीय भाव की तस्वीर इससे समझी जा सकती है कि विविधताओं से भरा देश ... जहां विभिन्न धर्म, परम्पराओं और विचारधाराओं के बावजूद इस दिन देश एक ही रंग में दिखाई देता है। स्वतंत्र राष्ट्र के गौरव का प्रतीक राष्ट्रीय ध्वजके दार्शनिक और आध्यात्मिक मायने हैं, जिसकी अभिकल्पना महापुरुषों द्वारा बहुत सोच-समझकर की गयी थी। जिसका प्रत्येक रंग व चक्र देश की एकता, अखंडता, विकास तथा खुशहाली का संदेश देता है। राष्ट्रीय ध्वज के तीनों रंग अपनी अलग पहचान लिए हुए है। अगर केसरिया रंग साहस और बलिदान का प्रतीक है, तो सफेद रंग सच्चाई अमन व शांति के महत्व को दर्शाता है और हरे रंग को समृद्धि का प्रतीक, साथ में अशोक चक्र जो गतिशील जीवन और निरन्तर आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करता है। 15 अगस्त पर

देश प्रतिभाओं से भरा हुआ है। बस जरूरत है उनके हुनर को समझने की

मेहनत / कौशल

ध्वजारोहण की प्रथा न केवल हमें भारतीय होने पर गर्वित कराती है, बल्कि यह दिन देश के हर एक नागरिक को उसके सम्मान के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाने की ओर इशारा भी करती है। सांस्कृतिक विरासत और परम्पराओं की श्रृंखला में पतंगबाजी को विशेष स्थान प्राप्त है। आजादी के जश्न में पतंगों को शुभ संदेश का वाहक माना गया है। यह खुशी और उल्लास मनाने की परंपरा का अहम हिस्सा है। आकाश में उड़ती पतंगें हमें स्वतंत्रता का एहसास दिलाती हैं। शायद यही वजह है कि 15 अगस्त पर पतंग की ऊंची उड़ान की कमान संभालने की कला का प्रदर्शन देखने को मिलता है। पतंगबाजी को जीने के हुनर के रूप में भी देखा जा सकता है ... उड़ान के दौरान चकरी और डोर के बीच का सही संतुलन और उसकी मजबूती ही हमें आसमानी मैदान में टिके रहते हुए प्रतिस्पर्धा में विजय प्राप्त करना सिखाती है। दिलचस्प यही है कि पतंग की 'ऊंची उड़ान' हमें स्वतंत्र होने के भाव को महसूस करने की ओर प्रेरित करती है। सच्चाई यह है कि स्वतंत्रता अमूल्य एक खूबसूरत अहसास है, जो एक व्यक्ति को आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायणता और संवेदनशील होना सिखाती है, जिसे कुछ लोग अपनाने में कंजूसी करते हैं। सामाजिक परिवेश पर नजर डालें, तो समझ पाएंगे कि अभी कई जगह अधिक प्रयास करने होंगे ... जैसे ऊंच-नीच, जातिवाद, धर्म तथा वर्ग विशेष या साम्प्रदायिकता का जहर भरना कभी देश हितों में नहीं रहा। असली आजादी के सही मायने तभी साकार हो पाएंगे, जब उसकी गरिमा और मर्यादा की परिधि में रह कर वैचारिक रूप से परिवर्तन की ओर पहल करके हर नागरिक को अपना कर्तव्य यह समझकर निभाना होगा कि हम देश के हित में योगदान दे रहे हैं। 'चक दे इंडिया' लम्बे इंतजार के बाद महिला हॉकी खिलाड़ियों ने और बैडमिंटन के सिंगल्स में सिंधु टोक्यो ओलंपिक विश्व चैपियनशिप में पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं, यही नहीं 1983 में प्रकाश पादुकोन के बाद दूसरी बार किसी ने पदक जीता है। 2020 ओलंपिक में अपने शानदार प्रदर्शन से महिलाओं ने एक बार फिर साबित कर दिया कि वे किसी से कम नहीं। खेल इतिहास के तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि इससे पहले भी ओलंपिक पदक में कई महिलाएं हॉकी से लेकर बैडमिंटन, बॉक्सिंग से लेकर भारोत्तोलन और एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में ओलंपिक पदक विजेता रह चुकी हैं और देश का परचम लहरा चुकी हैं। आज खेलों में महिला खिलाड़ियों का बढ़ता दबदबा साफ देखा जा सकता है। उनकी खेलों के प्रति अधिक रुचि और मैदान पर कुछ कर गुजरने का जज्बा दर्शाता है कि... देश की महिला चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है। ओलंपिक की सफलता के बाद सभी खिलाड़ी उत्साहपूर्ण गति में है। ऐसे में खेलों में उनकी अधिक भागीदारी बढ़ाने के लिए ... इन युवा खिलाड़ियों की बुनियादी सुविधाएं की ओर ध्यान आकर्षित नहीं कराया, तो उनके प्रति ईमानदारी नहीं होगी। युवा लड़कियों को ऊंची उड़ान भरने के लिए उन्हें सुरक्षित वातावरण प्रदान करना सरकार का सर्वप्रथम प्रयास होना चाहिए। सभी खिलाड़ियों के शारीरिक स्वास्थ्य पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि उन्हें विश्व स्तर की प्रतिस्पर्धाओं के लिए तैयार किया जा सके। एथलीटों के लिए तकनीकी विशेषताओं पर अधिक ध्यान व उपकरणों से लैस हब और बेहतर कोचिंग सुविधा उपलब्ध कराने के महत्व को समझना होगा। आज युवा खिलाड़ियों ने गोल करके इतिहास रचा है। अब बॉल हमारे पाले में है, जो खेल के नियमों को याद दिलाता है कि देश की युवा खिलाड़ियों की रचनात्मक शक्ति को पहचानें, ताकि उन्हें सकारात्मक दिशा में जाने की ओर बल मिले, तभी युवा भारत के युवा सपनों को नई उमंगों से भरी उड़ान मिल पाएगी। सही मायने में ये देश की धरती में जन्मे अनमोल रत्न हैं। दरअसल इन्होंने अनेकों छुपी हुई प्रतिभाओं से गोल्डन उम्मीद जगाई है। जिन्हें खोजने और तराशने की जिम्मेवारी सरकार और विभागों सहित हर एक नागरिक पर है। आजादी उत्सव के तिरंगे के रंगों में डूबा देश हर एक योद्धा को नमन करता है। सफलता की राह पर बुलंदियों को छूने का श्रेय परिवार सहित उन सभी लोगों को जाता है, जो आपके साथ जुड़े रहते हैं।

आजादी के इस जश्न में, देश के खिलाड़ियों ने जोड़ा एक नया अध्याय।

गुंजा ओलंपिक में भारत का नगाड़ा, चमके आसमान में देश के सितारे।
तिरंगा लहराया टोक्यो की सरजमीन पर,
हिन्दुस्तानी पहचान का बजा डंका,
मीठी सी सिहरन है उठती, जोश से भर जाएं दिन,
जब तिरंगा है लहराता,
भूल न जाना मां सपूतों का बलिदान, मनाते चले
आजादी का दोगुना धमाका